आज़ादी के क़रीब

लेखन: वाण्डा मिशाउ नैल्सन

चित्र: कॉलिन बूटमैन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

"जब लोग उसके बारे में बात करते हैं, जिसे आज़ादी कहा जाता है, उनके चेहरे अलाव की रोशनी में संजीदा हो जाते हैं। लगता है उसे पाने का एक ही रास्ता है, उत्तर कहलाने वाली जगह भाग जाना।"

लिंडी और उसकी गुड़िया सैली पक्के दोस्त हैं। लिंडी जहाँ कहीं जाती है, सैली ठीक उसके बगल में होती है। वे साथ खाते हैं, साथ ही सोते हैं, यहाँ तक कि कपास भी साथ ही साथ चुनते हैं। सो जिस रात लिंडी और उसकी मामा (माँ) आज़ादी की तलाश में निकल भागती हैं, सैली भी साथ ही जाती है।

नन्ही लिंडी की लीरों-चीथड़ों से बनी गुड़िया सैली, लिंडी और गुलामी में जकड़े उसके परिवार की अन्डरग्राउण्ड रेलरोड के सहारे साहसिक पलायन का जीवन्त वर्णन करती है। दिल को बींधने और हिला देने, पर साथ ही प्रेरणा देने वाली यह कहानी दोस्ती और इन्सान की अन्दरूनी ताकत के बारे में है। यात्रा खत्म हो जाने के बाद भी यह कहानी पाठकों के जीवन को स्पर्श करती रहेगी।

ऐसी गवाह है गुड़िया
जो कभी मर नहीं सकती
ग़र गुड़िया का साथ हो, तो कभी
अकेले नहीं होते आप।
- मार्गरेट एटवुड

मेरी शुरुआत कुछ लीरियों-चीथड़ों से वर्जिनिया के एक खेत-बागान में हुई थी। लिंडी की मामा (माँ) ने मुझे बनाया था। मिज़ (मिसेज़) रेचल ने मुझे इत्मीनान के साथ गढ़ा था। मेरे चेहरे को बनाते वक़्त उन्होंने बड़ी सावधानी से धागों से उसे उकेरा था। इसे वे कशीदाकारी कहतें हैं। मेरे बाल नहीं हैं। मिज़ रेचल ने पुराने कपड़े के एक टुकड़े को मेरे सिर के गिर्द लपेट कर बाँध दिया, जैसे वे खुद बाँधती हैं। पहले मैं सोचा करती थी काश मेरे भी बाल होते। पर अब मुझे बालों का न होना परेशान नहीं करता।

जब वे मुझे पूरी तरह सी चुकीं, मिज़ रेचल ने मुझे अपनी नन्ही बिटिया को दे दिया। लिंडी ने मुझे ज़ोर से लिपटाया और बोली, ''तुम्हारा नाम सैली है। हम पक्के दोस्त होंगे।'' उसी दिन से लिंडी जहाँ भी हो, मैं हमेशा उसके साथ होती हूँ।

लिंडी रात में मुझे जैसे चिपटा कर सोती है, वह मुझे अच्छा लगता है। मुझे तब भी परेशानी नहीं होती जब वह नींद में लुढ़क कर मेरे ऊपर आ जाती है। लिंडी की नन्ही बच्ची बनना बेहद ज़रूरी काम है।

जब लिंडी और मिज़ रेचल कपास चुनती हैं, मैं वहाँ भी होती हूँ। लिंडी एक रस्सी से मुझे अपनी कमर के गिर्द बाँध लेती है। पर रस्सी कुछ ढ़ीली रह जाती है, और कुछ ही देर बाद मैं धरती पर आ गिरती हूँ।

"सैली, तुम खुद को गन्दा कर रही हो," लिंडी कहती है। "अबकी बार ठीक से टिकी रहना।"

मिज़ रेचल कपाल से पसीना पोंछती हैं और लिंडी को बताती है कि मुझे कस कर कैसे बाँधाना चाहिए। इतने में गुलामों की निगरानी करने वाला चीखता है, "ऐ उधर, काम चालू रखो!" कुछ ऐसे मानो वह घोड़ों से बात कर रहा हो। वह घोड़े पर सवार है और हाथ में चाबुक थामे है। मिज़ रेचल और लिंडी जल्दी से कपास चुनने लगती हैं।

काम कठिन है, पर लम्बा दिन सब गुलामों के मिल कर गाने से कुछ आसान लगने लगता है, "कुछ नीचे झूल प्यारे रथ, तू आया है मुझे घर ले जाने..."

सूरज ढ़ल जाने के बाद हम गोल घेरे में बैठते हैं उन छोटे जन्तुओं के किस्से सुनते हैं जो बड़े जन्तुओं को उल्लू बनाते हैं या उन गुलामों की जो अपने 'मास्सा' (मास्टर यानी मालिक) को छकाते हैं। यह वक़्त सबसे अच्छा होता है क्योंकि सब खूब हंसते और गाते हैं।
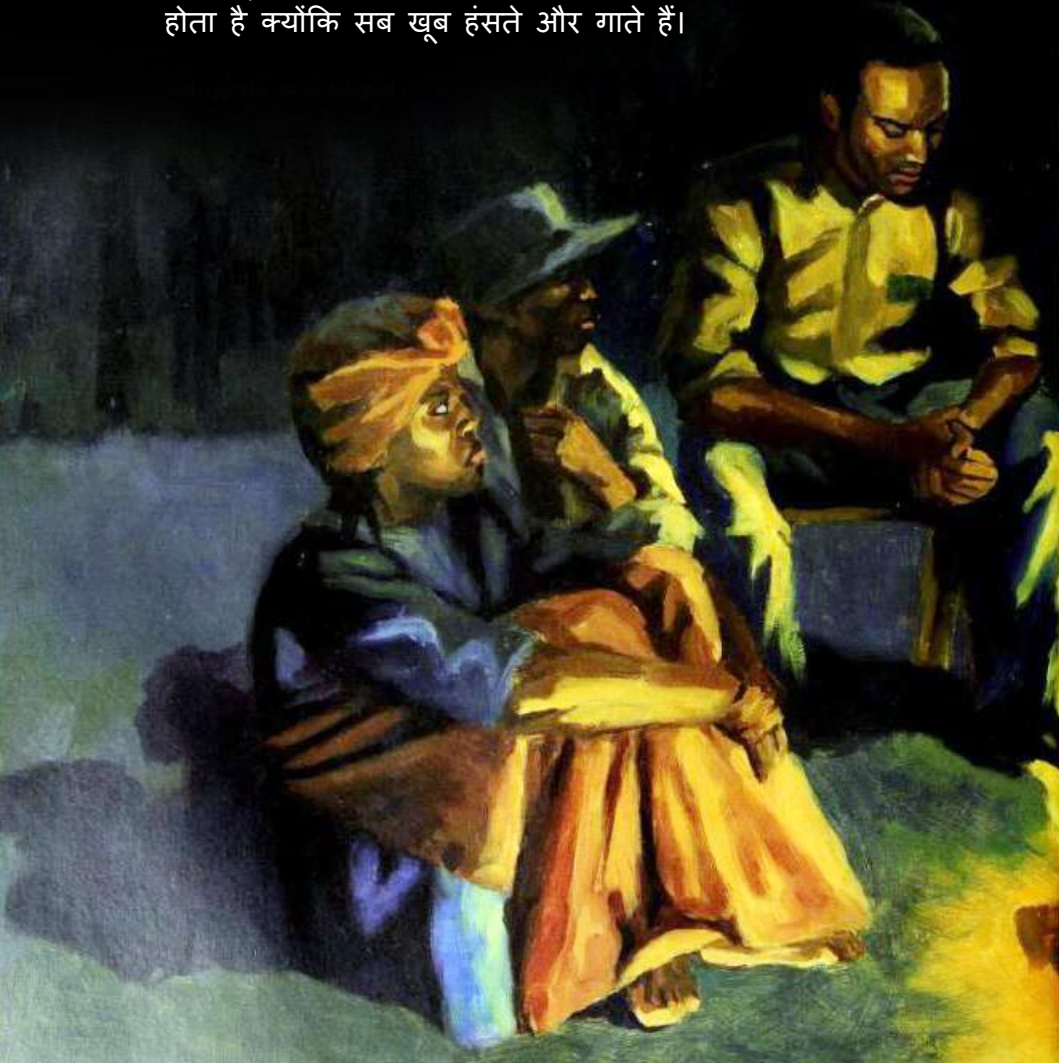
पर जब लोग उसके बारे में बात करने लगते हैं जिसे आज़ादी कहा जाता है उनके चेहरे अलाव की रोशनी में संजीदा हो जाते हैं। कुछ कहते हैं कि आज़ादी ख़रीदी जा सकती है, पर वह इतनी महंगी है कि हमने किसीको उसे ख़रीदते सुना ही नहीं है। लगता है कि इसे पाने का एक ही और तरीका है, उत्तर कहलाने वाली जगह भाग जाना।

इसके बाद मिज़ रेचल रात भर सूनी आँखों से आसमान को ताकती रहती हैं। वे लिंडी को थामे होती हैं और लिंडी मुझे। वे हमें झुलाती हुई गाती हैं, "चुरा ले जा, चुरा ले जा मुझे घर। यहाँ अब रहना नहीं मुझे लम्बा...
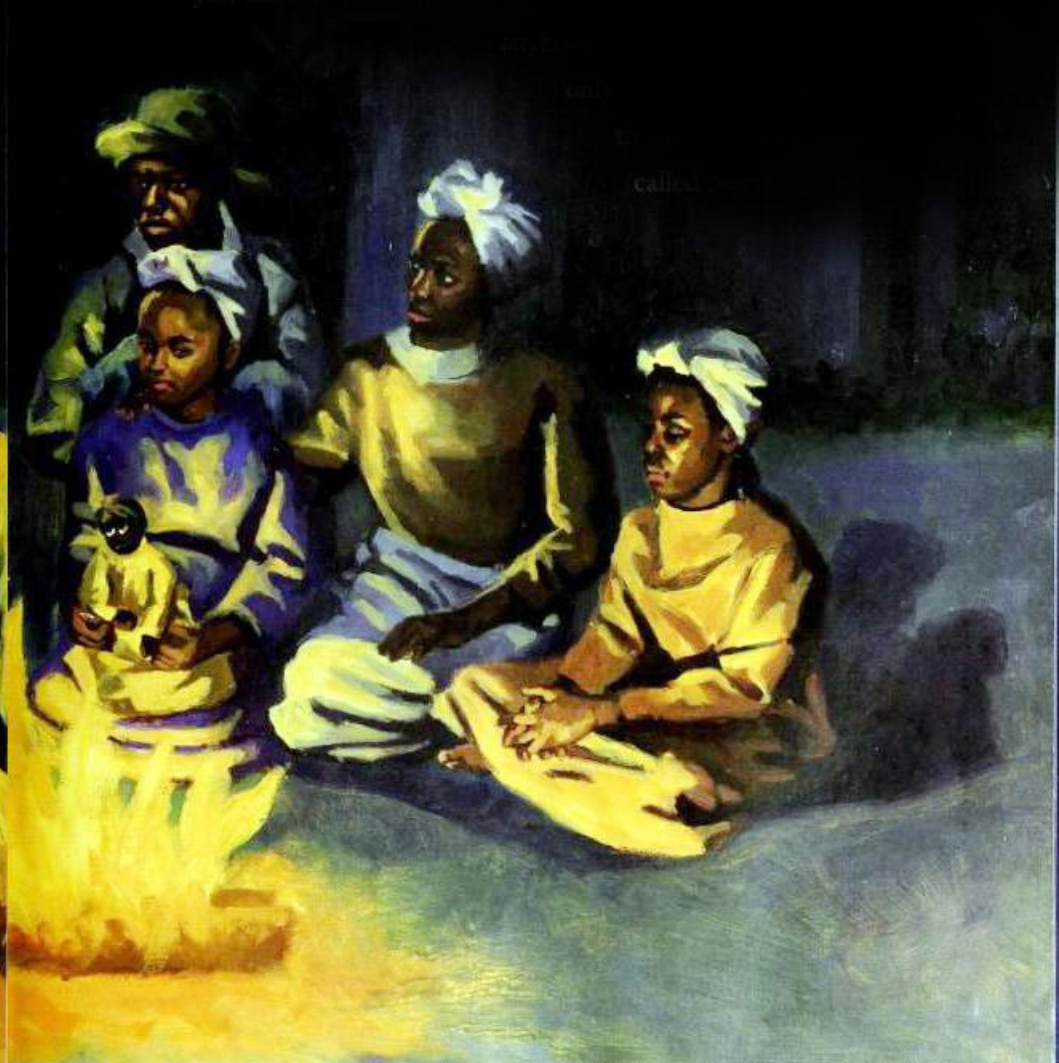
वे जिस तरह आज़ादी की बात करते हैं उससे लगता था कि वह बड़ी अच्छी चीज़ होगी। पर लिंडी के पापा के साथ जो कुछ गुज़रा उसके बाद मुझे शक होने लगा है। कुछ अनजान लोग मिस्टर हैनरी को सांकलों में जकड़ कर ले गए। लोग कहते हैं, "मास्सा ने उसे नदी के निचली तरफ बेच दिया है। क्योंकि उसने आज़ादी पाने की कोशिश की थी।" इधर मिज़ रेचल, वे बस रोती हैं, और रोती हैं, और कलपती हैं। लिंडी भी। उसने मुझे इतनी ज़ोर से भींच कर लिपटाया कि मुझे लगने लगा कि मेरी सीवन ही उधड़ जाएगी।
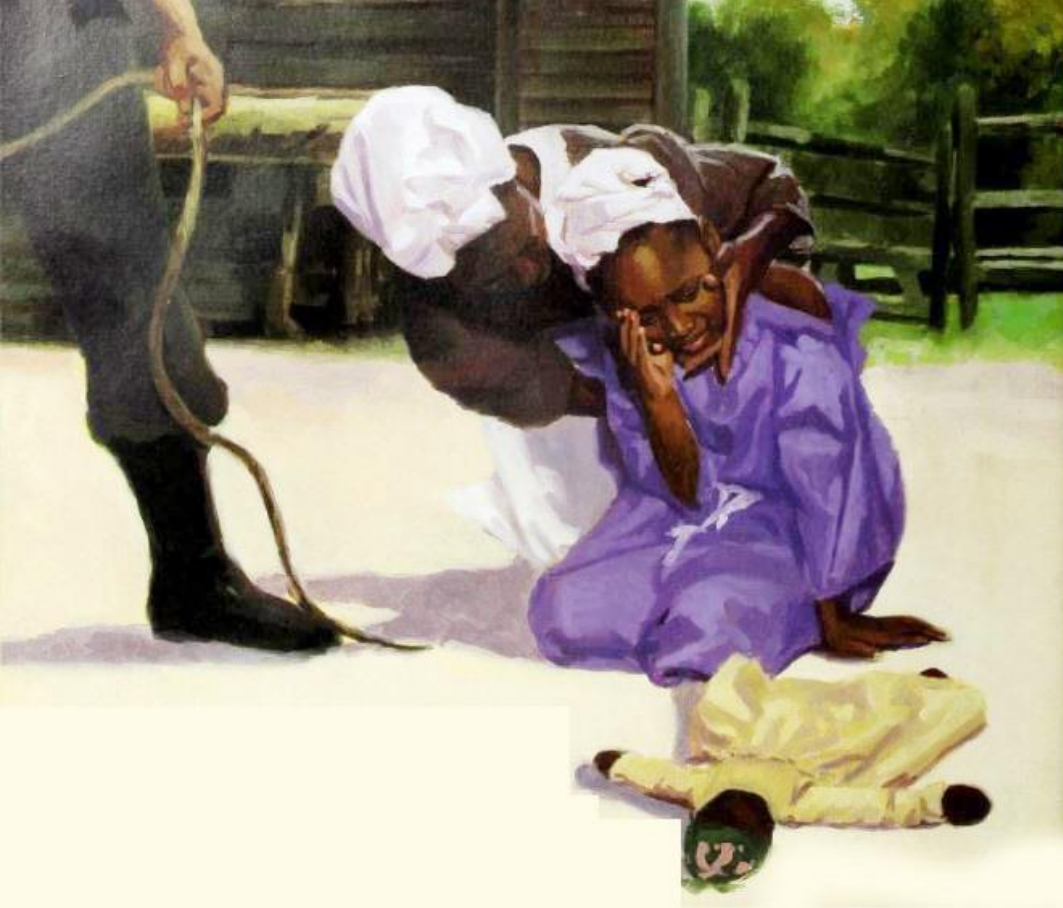
तब एक दिन निगरानी करने वाला लिंडी को कोडे लगाता है। उसने कुछ भी नहीं किया था, बस मास्सा के बेटे से कहा था कि वह उसे उसके नाम के हिज्जे लिखना बता दे। उस छोकरे ने लिंडी की चुगली कर दी। मास्सा आया और बोला, "मैं तुम लोगों को पढ़ना और लिखना ही भुला दूंगा।" उसने सबका काम रुकवा दिया ताकि सब इस ज़ुर्रत का हश्र देखें। मैं लिंडी की कमर पर बंधी थी पर जब सटासट कोड़े बरसे, मैं सरकी और गिर गई। मैं मुँह के बल गिरी थी सो देख तो न सकी पर मैंने उस भारी लचकदार कोड़े की आवाज़ें सुनीं। मैंने लिंडी को चीखते सुना, मिज़ रेचल को सुबकते सुना। और जब यह खत्म हुआ मैंने लिंडी की पीठ पर घाव देखे।

लिंडी की मरहम-पट्टी करते समय मिज़ रेचल ने प्रार्थना बुदबुदाई, "हे ईश्वर! मास्सा मेरी नन्ही को वैसे न बेचे जैसे उसके पापा को बेच डाला था।"

बाद में लिंडी ने मुझे एक ठूंठ पर बिठलाया, उसके गाल आँसुओं से तर-ब-तर थे। "किसी दिन सैली, हम वह नहीं कर रहे होंगे जो मास्सा करने को कहे। हम आज़ादी के क़रीब चले जाएंगे।"

मैं सोचने लगी, "प्रभु, रहम करे!"

एक रात लिंडी हमेशा की तरह मेरे पास सो रही थी। अचानक एक फुसफुसाहट हुई, लिंडी ने हड़बड़ी से अपने कपड़े पहने। सूरज अभी जगा नहीं है। पर खेतों पर खटने वाले गुलाम हमेशा पौ फटने से पहले ही जागते हैं, सो मैंने खास सोचा नहीं। मिज़ रेचल पूरी तरह तैयार हैं और लिंडी से कहती हैं, "जल्दी करो, पर बिलकुल चुपचाप।" लिंडी मुझे उठा अपनी कमर पर बाँधती है। जिस तरह उसका दिल धड़क रहा है, मैं समझ जाती हूँ कि कुछ बेहद ज़रूरी हो रहा है।

लिंडी मिज़ रेचल का हाथ थामती है और हम सब दबे पैर कोठरी के पीछे जाते हैं, और रात में भाग निकलते हैं। मैं जानती हूँ कि मैं दौड़ नहीं सकती, पर लगता है मानो बेतहाशा दौड़ रही हूँ। पैरों के नीचे टहनियाँ यों चटकती हैं, मानो हमें डपट रही हों। पर मिज़ रेचल ध्यान नहीं देतीं। वे दौड़ती जाती हैं।

"मामा मेरे पैर दुख रहे हैं," लिंडी कुनमुनाती है।

"जानती हूँ मेरी नन्ही," मिज़ रेचल फुसफुसाती हैं। "पर हमें बढ़ते जाना है। हमें कुछ दूर और दौड़ना है तब हम झाड़ियों में छिपेंगे, तब फिर से कुछ और दूर दौड़ेंगे।" लिंडी की साँस फूल रही है पर वह मुझे दिलासा दे कहती है, "फिक्र न करना सैली, मामा कहती हैं कि हम जल्द ही पापा के साथ होंगे।"

पर वह जल्द, जल्दी से नहीं आता।

मिस्टर हैनरी नदी किनारी इन्तज़ार कर रहे थे। उन्होंने मिज़ रेचल को गले लगाया। तब लिंडी को हवा में ऊपर उठाया और उसके साथ मुझे भी।

"पापा!" लिंडी हंसते हुए चीखी। पर मिस्टर हैनरी ने उसके मुँह पर हाथ धरा और उसे सीने से चिपटा लिया।

"अभी चुप रहो! हमें नाविक के पास पहुँचना है और नदी पार करनी है।"

हम तेज़ी से नदी के किनारे-किनारे बढ़ते हैं जहाँ वह नाविक अपनी छोटी-सी नाव में बैठा इन्तज़ार कर रहा है। एक भी लफ्ज़ कहे बिना हम नाव में चढ़ते हैं। रात घनी काली है जैसे पॉसम (अमरीका में पाया जाने वाला छोटा चौपाया) का अन्दरुनी हिस्सा। चारों ओर गहरी चुप्पी है, सिवा नाविक के चप्पू चलाने की आवाज़ के। मेरा चेहरा पानी के उन छींटों को सोख लेता है जो नाव के बढ़ने के साथ उछलते हैं।

उस पार उतर मिज़ रेचल शुक्रिया में नाविक का हाथ दबाती हैं। लिंडी के पापा हमें जंगल में आगे बढ़ा ले जाते हैं।

हम दौड़ते हैं, तब छिपते हैं, दौड़ते और छिपते हैं।

जब तक हम एक घर के पास नहीं पहुँच जाते जहाँ एक खिड़की से लालटेन दिखाई देती है। लिंडी के पापा "व्होआ! व्होआ!" की आवाज़ निकालते हैं, ठीक किसी उल्लू की तरह। लालटेन बुझ जाती है।

चश्मा पहने एक गोरा आदमी अंधेरे में बाहर निकलता है। वह इशारे से हमें घर के पिछवाड़े आने को कहता है।
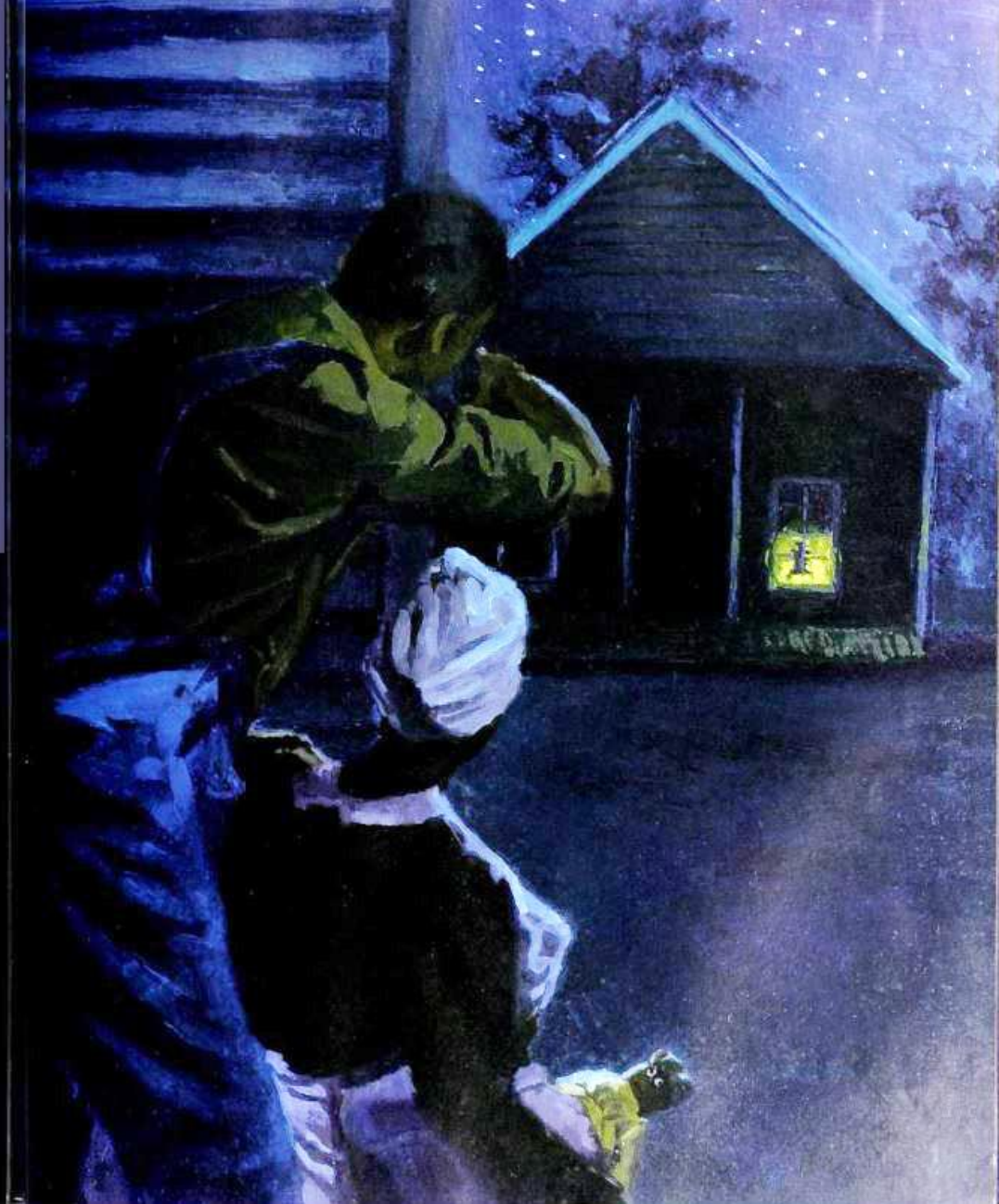
अन्दर रसोई में रुपहले बालों वाली एक औरत एक कोठार का दरवाज़ा खोलती है।

वह आदमी कोठार में बिछी दरी उठाता है और फर्श के कुछ फट्टे हटाता है। वहाँ एक सीढ़ी है जो नीचे घुप्प अंधेरे तहख़ाने की ओर जा रही है।

''जगह छोटी है और कुछ ठण्डी भी,'' आदमी कहता है। ''पर यही हमारी सबसे महफ़ूज़ जगह है।'' वह मिज़ रेचल को लालटेन थमाता है।

''मैंने कुछ कम्बल और पानी नीचे रख दिया है, मैं खाने को कुछ लेकर आती हूँ,'' रुपहले बालों वाली औरत कहती है।

''मेहरबानी मैम,'' मिस्टर हैनरी कहते हैं और सीढ़ियों से नीचे उतर जाते हैं।

औरत लिंडी को एक तकिया देती है। मिज़ रेचल की एक दोस्त ने, जो बड़े घर में काम करती थी, हमें तकियों के बारे में बताया था। पर मैंने पहले कभी तकिया देखा न था।
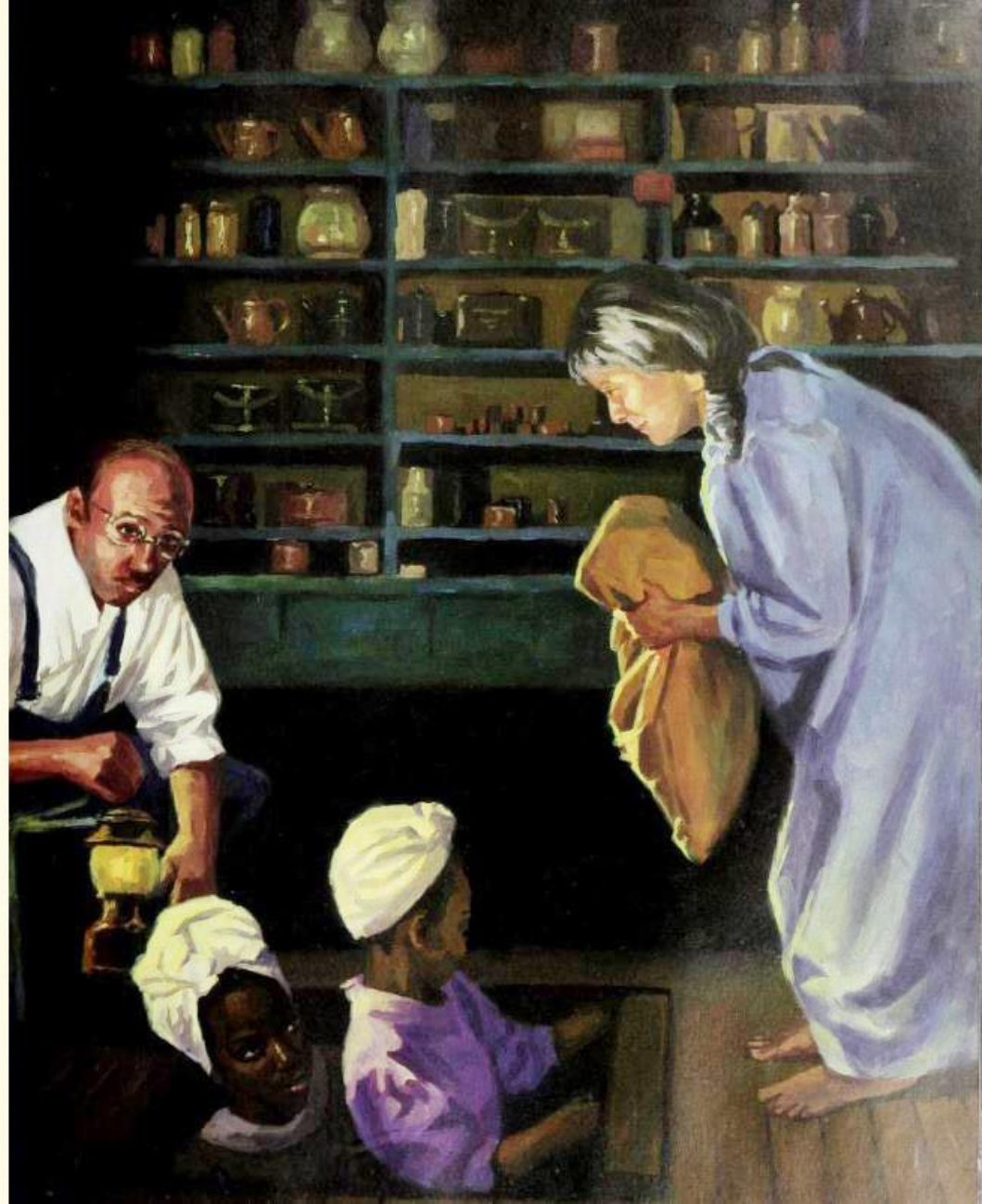
वह खुफिया कमरा छोटा ज़रूर था, पर मास्सा हमें जिस कुटिया में रखता था उससे खास छोटा भी नहीं। मिज़ रेचल फर्श पर दो कम्बल बिछाती हैं और सिवा मेरे सब पानी पीते हैं। लिंडी मुझे तकिए पर लिटाती है। कितना मुलायम है यह तकिया। मानो जन्नत से उतरा बादल हो!

रुपहले बालों वाली औरत शोरबे का एक पतीला, कटोरे, डबल रोटी और पनीर पकड़ाती है। तब वह फट्टों से जगह बन्द कर देती है। मिज़ रेचल खाना परोसती हैं। कोई बात नहीं करता। सब बेहद थके हुए हैं। बेहद डरे-सहमे भी।

शोरबे की आखिरी बून्द तक वे डबलरोटी से सोख खा लेते हैं।

''अब सो जाओ,'' पापा लिंडी और मुझे कहते हैं।

लिंडी फुसफुसाती है कि उसे पेशाब करना है।

मिस्टर हैनरी कोने में रखी बाल्टी की ओर इशारा करते हैं। ''पेशाबघर जाने में जोखिम है।''

लिंडी हमेशा की तरह मुझे चिपटा लेती है। वह अपना सिर भी उस तकिये पर टिकाती है और मुस्कुराती है। ''रात्रि सैली,'' वह फुसफुसा कर कहती है। हम आज़ादी के क़रीब हैं।''

अगर मैं मुस्कुरा सकती तो मुस्कुराती।
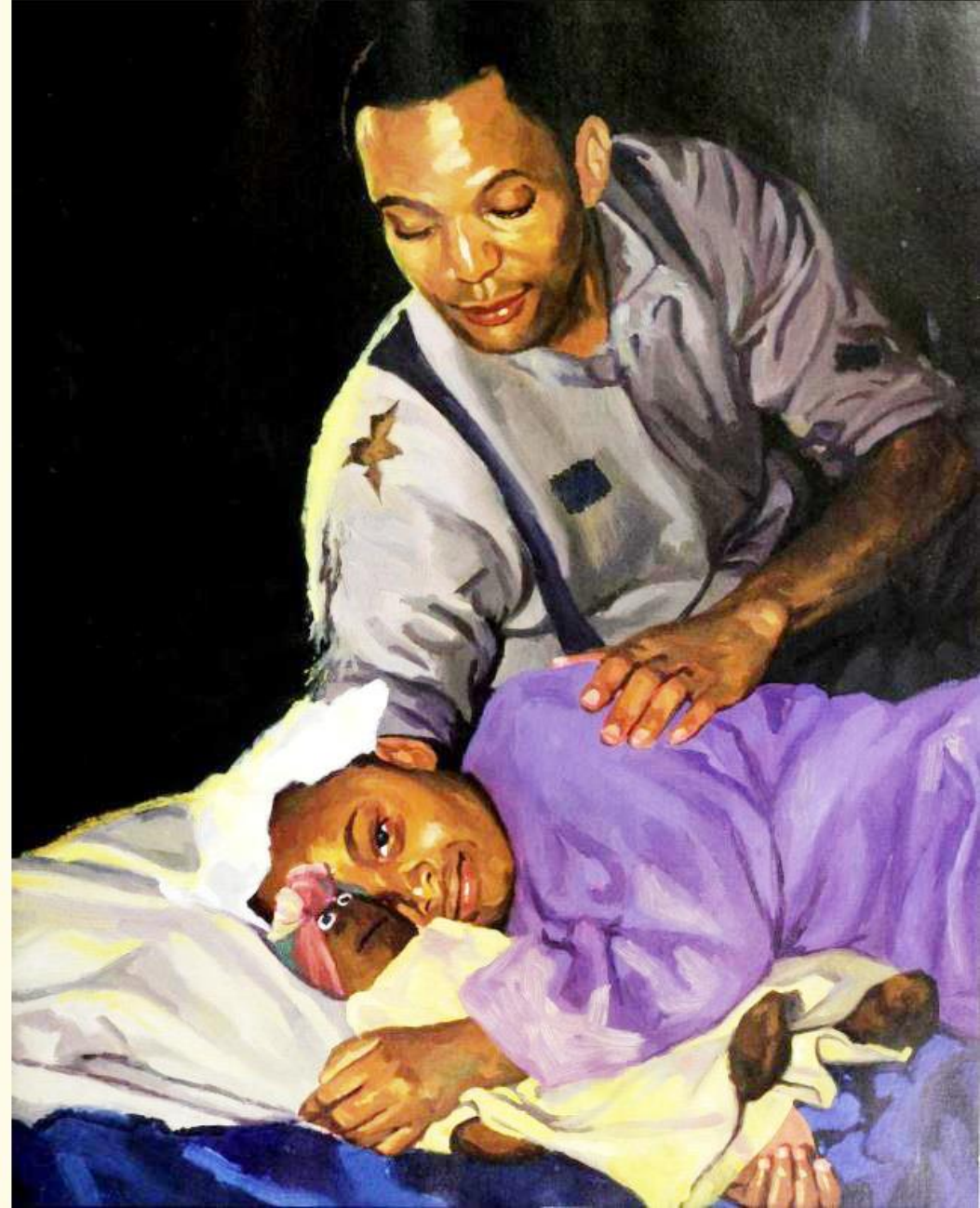
लगा यों मानो हम सोए ही थे कि मिज़ रेचल लिंडी को हिला कर जगाती हैं, ''चलो उठो मेरी नन्ही, जल्दी!''

''क्यों?'' उनींदी लिंडी पूछती है।

''गुलामों की धर-पकड़ करने वाले,'' मिस्टर हैनरी लालटेन बुझा फुसफुसाते हैं।

लिंडी मुझे कमर पर बाँधती है। लगता है नींद उसे जकड़े हुए है, क्योंकि उसकी गाँठ सख़्त नहीं लगती। मिज़ रेचल अपने एप्रन में कुछ डबलरोटी और पनीर ठूँसती हैं। और वे मिस्टर हैनरी के पीछे सीढ़ियों से ऊपर चले जाते हैं। वे हड़बड़ी में भागते हैं और मैं खुद को सरकता पाती हूँ। और तब मैं गिरती हूँ - नीचे और नीचे, जब तक मैं तहख़ाने की फर्श पर न जा पड़ती। लिंडी मेरा नाम पुकारती है। पर रुपहले बालों वाली औरत फट्टों से तहख़ाने को बन्द करे दे रही है। लिंडी! रुको! पर वह सुन नहीं पाती क्योंकि मेरी आवाज़ ही नहीं है। फट्टे रोशनी को बन्द कर देते हैं।

जब फट्टे वापस खुलते हैं, सूरज की रोशनी अन्दर चमकती है। रुपहले बालों वाली औरत सीढ़ी से नीचे उतरती है।

"तो यहाँ हो तुम," वह मुझे उठा कहती है। "तुम्हारी वह छुटकी मामा तुम्हें छोड़, जाना ही नहीं चाहती थी।" वह मेरे कपड़े ठीक करते हुए कहती है। "पर समय ही नहीं था।" वह मुझे एक कम्बल पर लिटाती है और उसे मेरे गिर्द लपेट देती है। "अच्छे से सो जाओ," वह कहती है, तब लालटेन और बाल्टी उठा सीढ़ी से ऊपर ले जाती है। इसके बाद वह फट्टों से फर्श को वापस ढक देती है।

अगर मैं आँसू बहा सकती तो वह कम्बल आँसुओं से धुल कर साफ हो चुका होता। मुझे लिंडी चाहिए। पर जानती हूँ कि वह नहीं लौटेगी। लौट सकती ही नहीं है। अकेलापन मुझे लील लेता है।
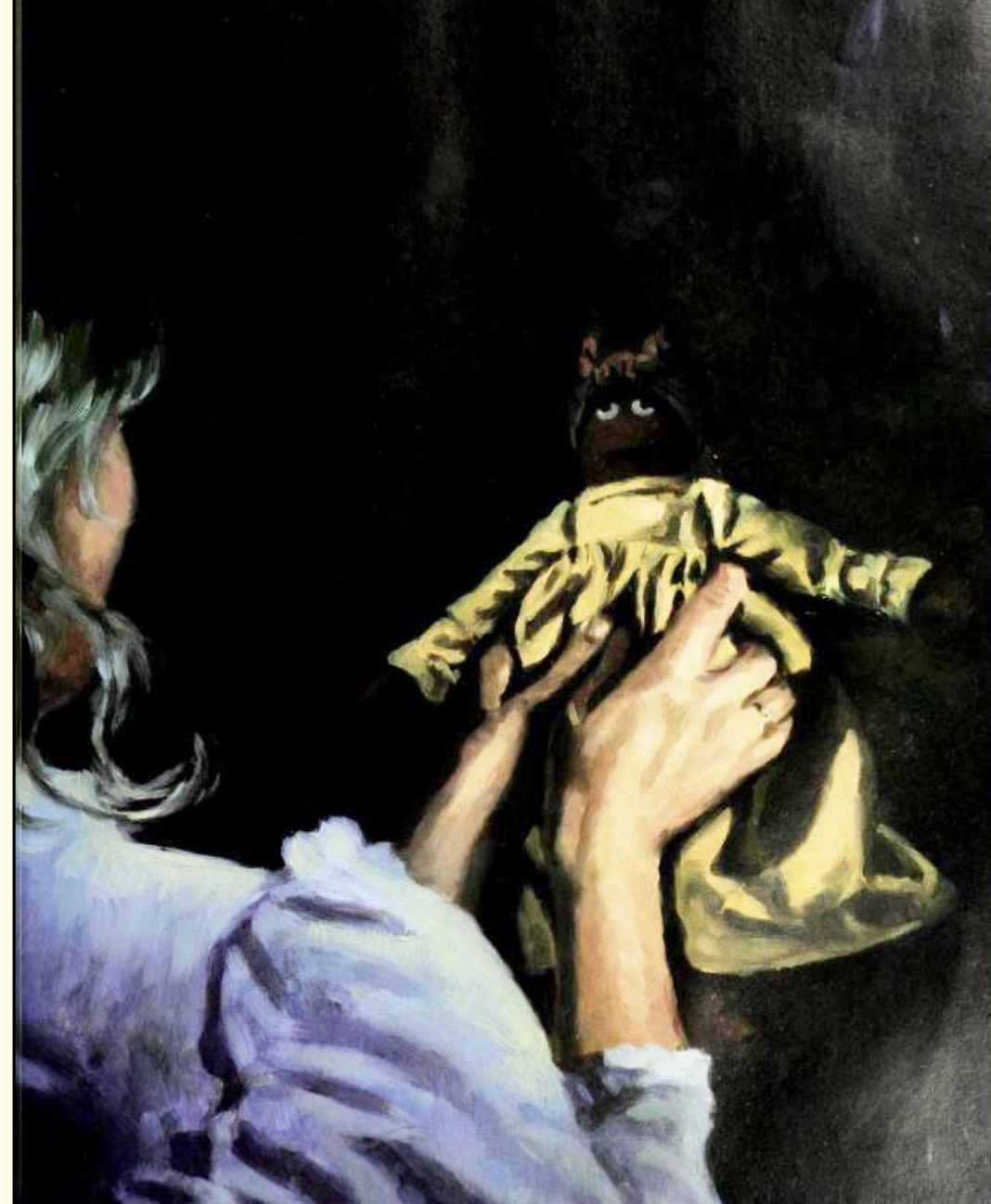
मैं अपना काफ़ी सारा समय लिंडी और उसके परिवार के बारे में सोचने में बिताती हूँ। वे कहाँ होंगे, क्या वे आज़ादी तक पहुँचे, जैसा वे चाहते थे। और मैं अपना काफ़ी समय यह दुआ करने में लगाती हूँ कि वे सही-सलामत पहुँच जाएं। और काफी समय शोक मनाने में लगाती हूँ। मैं खुद के लिए अफ़सोस करती हूँ। यह चाहती हूँ कि वह रुपहले बालों वाली औरत ही आए। पर वह नहीं आती। कोई नहीं आता।

कुछ समय बाद मुझे लगने लगता है कि गुलामों की धर-पकड़ करने वाले घर पर नज़र रखे हुए हैं। छिपने की यह जगह शायद अब महफूज़ नहीं है। शायद अपने बाकी दिन मैं यहीं पड़ी रहूँ।

कई दिनों बाद एक चुहिया मेरे चेहरे के ऊपर से गुज़र एक कोने में जा दुबकती है। मैं उसका साथ पा खुश हूँ। मैं मिज़ चुहिया को अपना घरौंदा बनाते, तब अपने नन्हों को पालते देखती हूँ। जब वे जाते हैं मुझे दुख होता है, क्योंकि अकेलापन फिर से मुझे घेर लेगा। मैं सोचने लगती हूँ कि उम्मीद करना ही बेकार है।

तब एक दिन, शुक्र है खुदा का, फट्टे अपनी जगह से हिलते हैं। कोई सीढ़ी से नीचे उतरता है। अगर मेरा दिल माँस और लहू से बना होता तो वह उसी तेज़ी से धड़कता जिस तेज़ी से लिंडी का उस रात धड़क रहा था, जब वे भागे थे।

लालटेन की रोशनी में मुझे एक औरत दिखती है जो अपनी नन्ही को कम्बल में लपेट रही है। बच्ची थरथरा रही है, लगता है ठण्ड से ज़्यादा डर के मारे। उसकी आँखें थकी हुई और आँसुओं से भीगी हैं।

वह औरत मुझे उठाती है और अपनी बिटिया से कहती है, "विला, ज़रूर यही वह गुड़िया होगी जिसके बारे में मिसेस बता रही थीं।" वह मेरे चेहरे से धूल-मिट्टी झाड़ती है और मुझे लालटेन के पास लाती है। "कितनी उम्दा कशीदाकारी है।"

"क्या मैं इसे रख सकती हूँ?" लड़की पूछती है। उसकी मामा हाँ में सिर हिलाती है। और विला मुझे इतनी ज़ोर से भींच कर चिपटाती है कि मुझे लगता है कि मेरे अन्दर का सब कुछ सीवन फाड़ कर बाहर निकल आएगा।
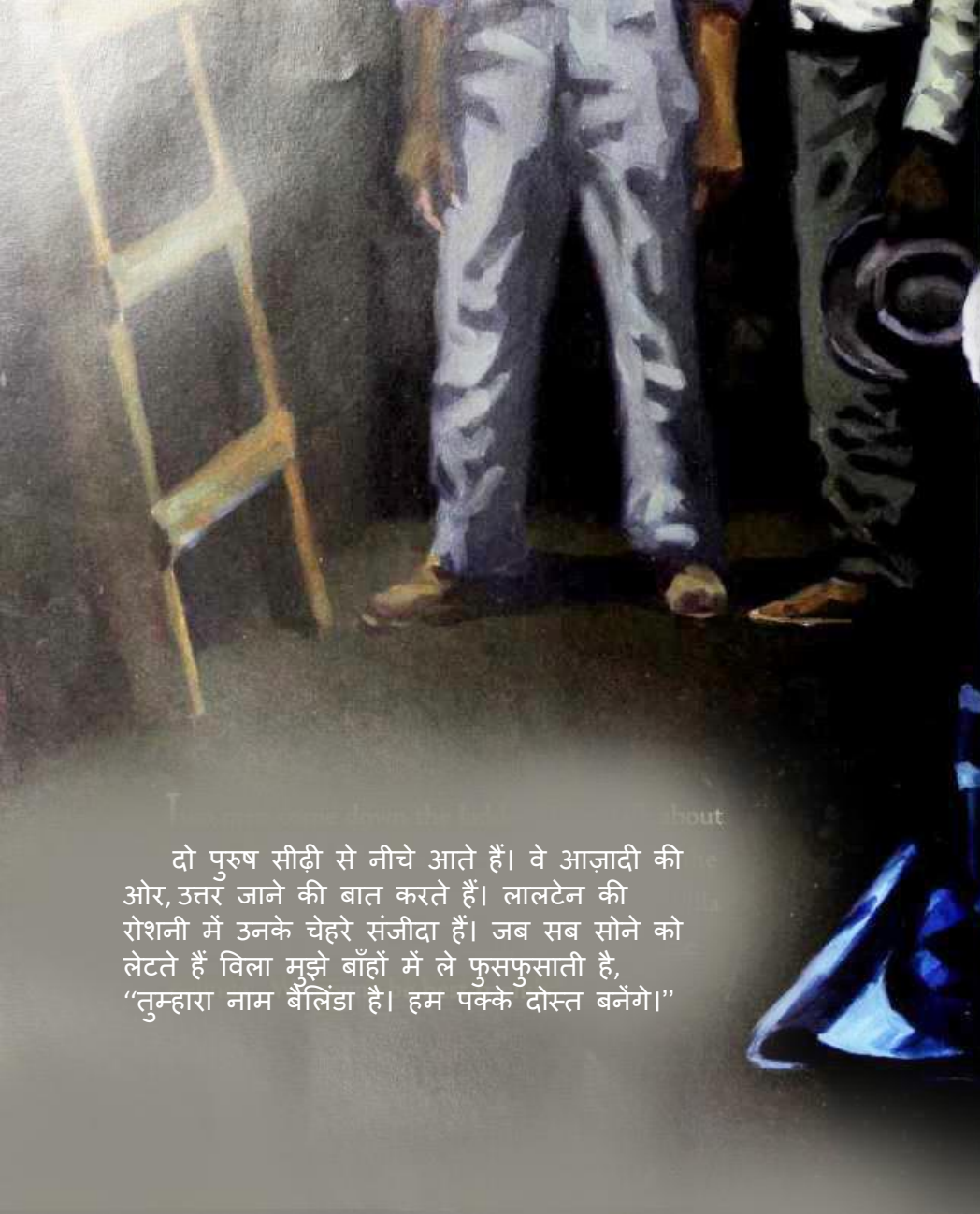
दो पुरुष सीढ़ी से नीचे आते हैं। वे आज़ादी की ओर, उत्तर जाने की बात करते हैं। लालटेन की रोशनी में उनके चेहरे संजीदा हैं। जब सब सोने को लेटते हैं विला मुझे बाँहों में ले फुसफुसाती है, "तुम्हारा नाम बैलिंडा है। हम पक्के दोस्त बनेंगे।"
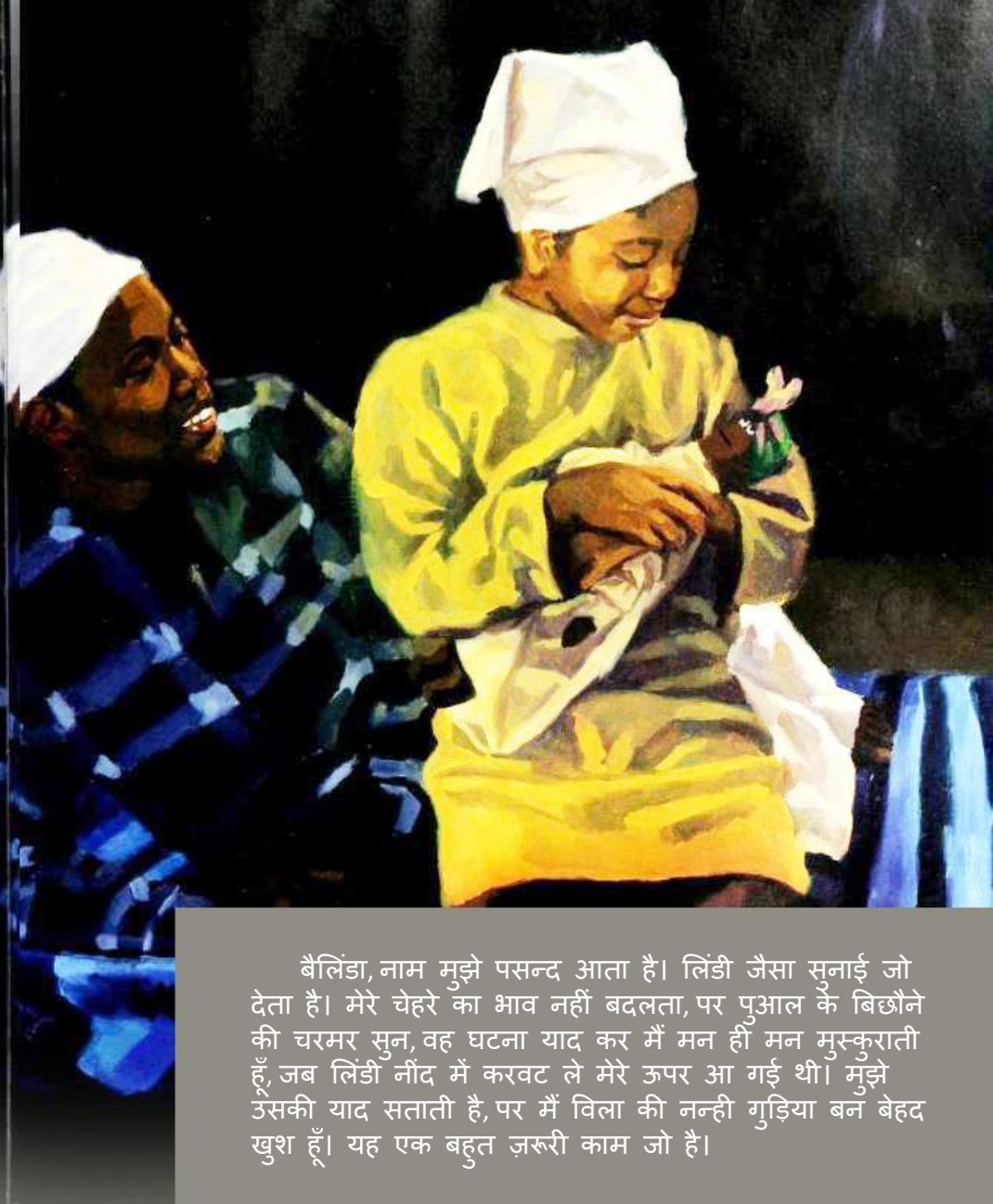
बैलिंडा, नाम मुझे पसन्द आता है। लिंडी जैसा सुनाई जो देता है। मेरे चेहरे का भाव नहीं बदलता, पर पुआल के बिछौने की चरमर सुन, वह घटना याद कर मैं मन ही मन मुस्कुराती हूँ, जब लिंडी नींद में करवट ले मेरे ऊपर आ गई थी। मुझे उसकी याद सताती है, पर मैं विला की नन्ही गुड़िया बन बेहद खुश हूँ। यह एक बहुत ज़रूरी काम जो है।

लेखिका की टीप

न्यू मैक्सिको के सैन्टा फे स्थित अंतर्राष्ट्रीय लोक कला म्यूज़ियम में एक बार जाने पर मुझे इस किताब - ऑलमोस्ट टू फ्रीडम (आज़ादी के क़रीब) को लिखने की प्रेरणा मिली। इस म्यूज़ियम में 1800 और 1900 में लीरों-चीथड़ों से बनी काली गुड़ियाएं प्रदर्शित थीं। उन्होंने फौरन मेरा ध्यान आकर्षित किया। उनमें अधिकांश पूरी तरह लीरों से बनाई गई थीं। मेरे पति ने म्यूज़ियम की मार्गदर्शिका से पढ़ कर सुनाया, "कहा जाता है कि इनमें से कुछ अन्डरग्राउण्ड रेलरोड के पनाहघरों से मिलीं थीं, जो सुझाता है कि वे काली बच्चियों की रही होंगी।" मैं गुड़ियाओं को ध्यान से देख रही थी कि मेरे पति पास झुके और फुसफुसाए, "इसमें एक कहानी है।" हाँ, मैंने सोचा, *काश ये गुड़ियाएं बोल सकतीं*।

जिरार्ड संकलन, केस 8.12

द म्यूज़ियम ऑफ इन्टरनैशनल फोक आर्ट

म्यूज़ियम ऑफ न्यू मैक्सिको, सान्टा फे, की एक इकाई

अंडरग्राउन्ड रेलरोड (भूमिगत रेलमार्ग) 1830 से 1861 में गृहयुद्ध की शुरुआत तक सबसे अधिक सक्रिय था। यह कोई वास्तविक रेल मार्ग नहीं था जिसमें ज़मीन के नीचे रेलगाड़ियाँ दौड़ती हों। यह साहसी काले और गोरे लोगों का एक खुफ़िया जाल था जो गुलामों को चोरी-छिपे उत्तरी और पश्चिमी राज्यों या कनाडा में पलायन करने में मदद करता था। किसीको भी पलायन के सभी रास्तों और पनाहघरों की पूरी जानकारी नहीं थी। आज तक भी इस बारे में सब कुछ पता नहीं चला है।

गलामों की मदद करने को पूरी तरह कटिबद्ध लोग, जैसे इस कथा का नाविक, रुपहले बालों वाली औरत और उसका पति, इस आन्दोलन का हिस्सा बनने के लिए जोखिम उठाते थे। पर भगोडों के खतरे और भी बड़े थे। हालांकि उनमें से कई जहाज़ों, घोड़ागड़ियों, या ट्रेन से ले जाए जाते थे, अधिकांश पैदल ही जंगलों, दलदलों, खेतों और नदियों को पार करते थे। अक्सर गलामों की धर-पकड़ करने वाले उनके पीछे लगे होते थे। सो कई भगोड़े पकड़े भी जाते, उन्हें उनके मालिकों को लौटाया जाता और वे भारी सज़ा भुगतते। पकड़े गए भगोड़ों को बेरहमी से कोड़े लगाए जाते, या उन्हें बेच दिया जाता और वे अपने परिवार से हमशा के लिए बिछड़ जाते। कुछ के गरदन पर लोहे के पट्टे बांधे जाते, उन्हें जंज़ीरों से जकड़ दिया जाता, या पैरों की उंगलियाँ काट दी जातीं ताकि वे फिर भागने की जुर्रत न कर सकें। इस सबके बावजूद हज़ारों गुलाम भूमिगत रेलरोड़ की मदद से पलायन कर सके।